निर्बया

About the author: My name is **Hema.M**, graduated from Jawaharlal Nehru Rajkiy Mahavidyalay in Geography. By the end of third year, I was more into English literature than my own subject, so then decided to do my masters in English literature it was a life changing decision for me. Geography did gave me the knowledge about my surroundings, my environment but literature thought me about my own self.

I felt more connected towards people and books, the growth of women hood and feminism gave a spark of acceptance in me for all my individual beings. As a teacher, I felt the need to inculcate these spark and values of equality among the every gender.so, that they will grow up to break all the stereotypes which has been there around them for centuries.

मैं निर्भया नहीं अभी बहुत संघर्ष बाकी है मुझ में अभी भी बहुत टूटे टुकड़े बाकी है।।
मेरे कपड़ों में लगे गंदे सोच मिटाने बाकी है..
मेरे शरीर मैं लगे गंदे नजरों के डब्बे मिटाने बाकी ही ।।
आंके नीची करो .. कितनी छोटे कपड़े पहने है, रात को बाहर नही जाते, घर मैं बैटो... ये सब कोई लडको को क्यों नहीं कहता ये जानना अभी भी बाकी है।।
अगर किसी एक के कैद होने पर ही दूसरे को आजादी मिलेगी थो ये आजादी आदमी को ही क्यों ये जानना अभी भी बाकी है।

आंखो में पढ़े पर्दो का उठना अभी भी बाकी है .. कैद पंको को आजाद करना अभी भी बाकी है।।
घर 9 से 5 वाली जॉब कर के आने के बावजूद "खाने में क्या है" पत्ती के इस सवाल का जवाब अभी भी पत्नी को ही क्यों देना पड़ता हैं ये जानना अभी भी बाकी है।
कॉन्सेंट सिर्फ इलीगल शादी से पहले ही क्यों शादी के बाद क्यों नही ये जानना अभी भी बाकी है।।
तुम्हारी उम्र 28 हो गई तुम जल्दी शादी कर लो, ये बात कोई पुरुष को क्यों नही कहता, ये समझना अभी बाकी है।।

आसमान में बजते रॉकेट गिन्नु या देश के बढ़ते रेप केसेज ...उम्र गठी जा रही है, पर सवाल अभी भी इंसाफ का है कि कितना जानना बाकी है..

उस निर्भया को थी इंसाफ मिल गया .. पर और कितनी ही निर्बया निर्भय होके आगे आ पाएगी .. या जाना अभी भी बाकी है।।